IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, October 2024

माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों में सतत एवं व्यापक मूल्याँकन प्रक्रिया सम्बन्धितज्ञान एवं अभिवृत्ति का अध्ययन

डॉ. सुधांशु कुमार पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक (बी.एड.)
महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदोई, उ.प्र.
skpandey.rdc@gmail.com

Abstract: *The purpose of the research investigation was to study the knowledge and attitude of the secondary level teachers regarding continuous and comprehensive evaluation process. The study was conducted on 100 randomly selected secondary level teachers of Lucknow and Sitapur district. The investigation was done with the help of tools constructed by the researcher. There were four parts and thirty items/questions in the tool used to collect the data section "A" of the tool was investigating the knowledge of secondary school teachers about continuous and comprehensive evaluation process. Section "B" of the tool was investigating the priorities of secondary school teachers about methods and strategies to conduct continuous and comprehensive evaluation process. The thired part "C" of the tool was investigating the knowledge of secondary school teachers about the construction/administration of tools related to continuous and comprehensive evaluation. Part four "D" of the tool consisted of items related to the attitude of the secondary school teachers towards continuous and comprehensive evaluation process. Analysis of data was done with the help of percentage. It was concluded from the study that teachers of secondary level had satisfactory knowledge about continuous and comprehensive evaluation process, tool construction, process of evaluation as well as they showed a positive attitude towards continuous and comprehensive evaluation process.*

Keywords: Continuous Comprehensive Evaluation, Teachers, Secondary School, Knowledge, Attitude

I. INTRODUCTION

मूल्याँकन, परिणामों का भविष्यकथनात्मक, संरचित एवं व्याख्यात्मक वर्णन है। मूल्याँकन को संरचनात्मक एवं योगात्मक मूल्याँकन के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। भारत में शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 द्वारा सततएवं व्यापक मूल्याँकन को शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के अनिवार्य अंग के रूप में प्रस्तुत किया गया है। भारत में केन्द्र सरकार, राज्य सरकारों एवं अन्य मान्यता प्रदान करने वाली संस्थाओं द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों के सम्यक विकास को ध्यान में रखते हुए सतत एवं व्यापक मूल्याँकन को अंगीकार किया गया है। अग्रवाल (2005) के अनुसार विद्यालयों में छठवीं से लेकर माध्यमिक स्तर तक सतत एवं व्यापक मूल्याँकन आधारित प्रणाली को शिक्षा प्रक्रिया में सम्मिलित कर लिया गया है। सतत एवं व्यापक मूल्याँकन विद्यालय आधारित मूल्याँकन की एक प्रणाली को सन्दर्भित करता है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के समस्त पहलुओं को सम्मिलित करते हुए विद्यार्थियों के सर्वांगीण एवं समरस विकास का प्रयास किया जाता है। सरला एवं ममता (1998) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष प्रतिपादित किया कि दिल्ली महानगर पालिका के अन्तर्गत आने वाले समस्त प्रकार एवं स्तर के अध्यापकों एवं प्रधानाध्यापकों द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्याँकन का अभ्यास किया जाता था। थोटे (2014) ने अपने अध्ययन में पाया कि विज्ञान एवं कला वर्ग के परास्नातक शिक्षकों में सतत एवं व्यापक मूल्याँकन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं था। कौत्स एवं कौर (2013) ने अपने अध्ययन में पाया कि ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों में सतत एवं व्यापक मूल्याँकन के प्रति मूल्यक्षीकरण में सार्थक

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, October 2024

अंतर था तथा ग्रामीण शिक्षक सतत एवं व्यापक मूल्याँकन के संदर्भ में शहरी शिक्षकों से अधिक धनात्मक प्रत्यक्षीकरण वाले पाये गये। सिंह एवं अन्य (2013) ने अपने अध्ययन में पाया कि बीएड के प्रशिक्षुओं की सतत एवं व्यापक मूल्याँकन के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति थी तथा उनका यह भी मानना था कि शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के अन्तर्गत सतत एवं व्यापक मूल्याँकन शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों हेतु सहायक है। आनन्द एवं अन्य (2013) द्वारा किए गये अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सतत एवं व्यापक मूल्याँकन विद्यार्थियों को स्वमूल्याँकन एवं सम समूह आधारित मूल्याँकन के माध्यम से अपने प्रदर्शन को परिमार्जित करने का अवसर देकर एवं इस प्रकार आत्म संतोष के माध्यम से उनके मानसिक आरोग्य को भी धनात्मक रूप से प्रभावित करता पाया गया। सीरिल एवं जयशेखरन (2016) ने अपने अध्ययन में पाया कि डिंडुगुल जिले के हाईस्कूल के विद्यार्थियों में सतत एवं व्यापक मूल्याँकन के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति थी।

इस प्रकार पर्याप्त समीक्षा के उपरांत यह पाया गया कि माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के सतत एवं व्यापक मूल्याँकन की प्रक्रिया सम्बन्धित ज्ञान तथा अभिवृत्ति के परीक्षण से सम्बन्धित अध्ययनों का अभाव है। इस कारण ही शोधकर्ता द्वारा माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों में सतत एवं व्यापक मूल्याँकन प्रक्रिया सम्बन्धित ज्ञान एवं अभिवृत्ति का अध्ययन विषयक शोधकार्य करने का निश्चय किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

1 माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के सतत एवं व्यापक मूल्याँकन से सम्बन्धित ज्ञान का परीक्षण करना।
2 माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के परीक्षण निर्माण/प्रशासन से सम्बन्धित ज्ञान का परीक्षण करना।
3 माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की सतत एवं व्यापक मूल्याँकन के प्रति अभिवृत्ति का परीक्षण करना।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध समस्या की प्रकृति के अनुरूप अध्ययन हेतु अनुसंधान की वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु उत्तर प्रदेश राज्य के लखनऊ एवं सीतापुर जनपद के माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश द्वारा मान्यता प्राप्त 10–10 माध्यमिक विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के कुल 50 पुरुष एवं 50 महिला शिक्षकों का चयन साधारण यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित परीक्षण का उपयोग किया गया। परीक्षण के निर्माण हेतु सर्वप्रथम सतत एवं व्यापक मूल्याँकन परीक्षण की विमाओं का निर्धारण करने हेतु शैक्षिक प्रशासकों, शिक्षक शिक्षा के आचार्यों, शोधार्थियों, मनोवैज्ञानिकों एवं माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के विचार को जानने हेतु उनका साक्षात्कार लिया गया। साक्षात्कार में उनसे निम्नलिखित 2 प्रश्न किये गये:

1 सतत एवं व्यापक मूल्याँकन परीक्षण की विमायें कौन–कौन सी हो सकती हैं?
2 सतत एवं व्यापक मूल्याँकन की विभिन्न विमाओं से सम्बन्धित पद/प्रश्न कौन–कौन से हो सकते हैं?

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, October 2024

पुनः सभी प्रशासकों, शिक्षक शिक्षा के आचार्यों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों द्वारा सुझायी गयी विमाओं एवं उनसे सम्बन्धित पदों/प्रश्नों का संकलन करने के उपरान्त पुनरावृत्तियुक्त विमाओं एवं पदों/प्रश्नों को अलग कर दिया गया। इस प्रकार प्राप्त सतत एवं व्यापक मूल्याँकन परीक्षण के अंतिम प्रारूप (जिसमें कुल चार भागों में कुल 30 पद/प्रश्न सम्मिलित किए गये) को शोधकार्य के उपकरण के रूप में प्रयुक्त किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन का प्रथम उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के सतत एवं व्यापक मूल्याँकन से सम्बन्धित ज्ञान का परीक्षण करना था। इस हेतु शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित सतत एवं व्यापक मूल्याँकन परीक्षण में सम्मिलित सम्बन्धित प्रश्नों के विकल्पों में से न्यादर्श द्वारा चुने गये विकल्पों की आवृत्तियां एवं प्रतिशत ज्ञात किए गये जिसका विवरण तालिका–1 एवं तालिका–2 में दिया गया है:

तालिका–1 माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के सतत एवं व्यापक मूल्याँकन से सम्बन्धित ज्ञान के परीक्षण हेतु न्यादर्श द्वारा चुने गये विकल्पों की आवृत्ति एवं प्रतिशत

अ–सतत एवं व्यापक मूल्याँकन के ज्ञान से सम्बन्धित प्रश्न एवं उसके उत्तरों के विकल्प		आवृत्ति	प्रतिशत
1–आपके अनुसार मूल्याँकन का अर्थ क्या है?			
क	विद्यार्थियों को परीक्षणोपरांत पृष्ठपोषण देना।	**30**	**30**
ख	विद्यार्थियों का परीक्षण करना और अंक बता देना।	**14**	**14**
ग	विद्यार्थियों के विद्यालयी एवं सहविद्यालयी विकास का परीक्षण करना।	**56**	**56**
2–आपके अनुसार सतत मूल्याँकन का क्या अर्थ है?		**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
क	मूल्याँकन को शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न भाग समझना।	**32**	**32**
ख	विद्यार्थियों के विद्यालयी एवं सहविद्यालयी विकास का व्यापक एवं सतत परीक्षण करना।	**56**	**56**
ग	पाठ्यक्रम के साथ–साथ मासिक परीक्षा लेते रहना।	**12**	**12**
3–सतत एवं व्यापक मूल्याँकन क्या होता है?		**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
क	विद्यार्थी के सभी विषयों का लगातार निश्चित समय पर मूल्याँकन।	**10**	**10**
ख	विद्यार्थी के संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों का सतत मूल्याँकन।	**52**	**52**
ग	विद्यार्थी की मानसिक क्षमताओं का गहन परीक्षण।	**38**	**38**
4–आपके अनुसार सतत एवं व्यापक मूल्याँकन का मुख्य उद्देश्य क्या है?		**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
क	विद्यार्थियों में वार्षिक परीक्षाफल के भय एवं भार को कम करना।	**20**	**20**
ख	विद्यार्थियों का व्यापक विकास सुनिश्चित करना।	**23**	**23**
ग	विद्यार्थियों के सीखने की कठिनाईयों का समय पर पता लगाना तथा उनका निदान करना।	**57**	**57**
5–सतत एवं व्यापक मूल्याँकन किसके लिए लाभप्रद है?		**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
क	विद्यार्थियों के लिए	**22**	**22**
ख	शिक्षकों के लिए	**27**	**27**
ग	दोनों के लिए	**51**	**51**

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, October 2024

6–सतत एवं व्यापक मूल्याँकन में क्या माप सकते हैं?		आवृत्ति	प्रतिशत
क	विषयगत योग्यताएं एवं मनोवैज्ञानिक कौशल	22	22
ख	सामाजिक व व्यक्तिगत कौशल	22	22
ग	उपर्युक्त सभी	56	56
7–योगात्मक मूल्याँकन का अर्थ है?		**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
क	विद्यार्थी द्वारा अध्ययन किये गये विषयों के प्राप्तांकों के आधार पर उसकी श्रेणी का निर्धारण करना।	22	22
ख	विद्यार्थी के पिछली कक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर उसका मूल्याँकन करना।	22	22
ग	सत्रान्त में एक परीक्षा के आधार पर विद्यार्थी के अधिगम स्तर का निर्धारण कर देना।	56	56
8–संरचनात्मक मूल्याँकन क्या है?		**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
क	परीक्षणों की रचना करके मूल्याँकन करना।	10	10
ख	वर्ष भर का मूल्याँकन एक प्रश्नपत्र की रचना करके एवं विद्यार्थियों पर प्रशासित करके करना।	30	30
ग	विद्यार्थी के अधिगम स्तर का वर्ष भर विभिन्न युक्तियों द्वारा मूल्याँकन करना।	60	60
9–विद्यार्थी की विद्यालयी एवं सहविद्यालयी उपलब्धि/प्रगति का आंकलन करने हेतु आपके अनुसार किस प्रकार का मूल्याँकन उपयुक्त होगा?		**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
क	योगात्मक मूल्याँकन	24	24
ख	संरचनात्मक मूल्याँकन	24	24
ग	दोनों का आवश्यकतानुसार प्रयोग	52	52
10–सतत व्यापक शिक्षण एवं अधिगम का क्या अर्थ है?		**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
क	विद्यार्थी को वर्षभर पढ़ाना और विद्यार्थी का वर्षभर पढना।	10	10
ख	शिक्षण में विद्यालयी एवं सहविद्यालयी विषयों का समावेश एवं विद्यार्थी द्वारा इनका अधिगम।	53	53
ग	विद्यार्थी को प्रत्येक विषय वर्षभर पढ़ाना एवं विद्यार्थी द्वारा प्रत्येक विषय में अच्छे अंक अर्जित करना।	37	37
11–सतत एवं व्यापक मूल्याँकन के अन्तर्गत विद्यार्थियों को पृष्ठपोषण (फीडबैक) देने के लिए आप के अनुसार उचित क्या होगा?		**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
क	ग्रेडिंग प्रणाली	22	22
ख	अंक प्रदान करना	15	15
ग	अंकन, ग्रेडिंग एवं विद्यार्थियों से चर्चा	63	63

इस प्रकार तालिका–1 के विश्लेषण से यह परिलक्षित होता है कि सतत एवं व्यापक मूल्याँकन से सम्बन्धित ज्ञान के परीक्षण के समस्त पदों/प्रश्नों पर 50 प्रतिशत से अधिक माध्यमिक स्तर के शिक्षकों द्वारा उपयुक्त उत्तरों को चुना गया। अतः परीक्षणोपरांत माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में सतत एवं व्यापक मूल्याँकन से सम्बन्धित संतोषजनक ज्ञान पाया गया।

प्रस्तुत अध्ययन के प्रथम उद्देश्य, माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के सतत एवं व्यापक मूल्याँकन से सम्बन्धित ज्ञान का परीक्षण करना, के अन्तर्गत शिक्षकों द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु प्रयुक्त की जाने वाली युक्तियों एवं विधियों के प्रयोग से

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, October 2024

सम्बन्धित ज्ञान के परीक्षण हेतु उनसे प्रश्न किया गया कि "आप सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु कौन सी युक्ति/युक्तियाँ या विधि/विधियाँ अपनाना चाहेंगे?" इस हेतु उनको 12 विभिन्न युक्तियों को वरीयता क्रम (1, 2, 3———12) के मत देने हेतु कहा गया। माध्यमिक स्तर के शिक्षकों द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु विभिन्न युक्तियों को दत्त वरीयता क्रम एवं प्राथमिकताओं का प्रतिशत के आधार पर विवरण तालिका–2 में दिया गया है।

तालिका–2 माध्यमिक स्तर के शिक्षकों द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु विभिन्न युक्तियों को दत्तवरीयता क्रम एवं प्राथमिकताओं का प्रतिशत

ब–सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु युक्ति या विधि	उत्तरदाताओं की प्राथमिकता के अनुसार प्रतिशत											
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भूमिका निर्वाह	70	0	0	20	0	10	0	0	0	0	0	0
शैक्षिक पर्यटन	0	0	20	30	30	0	0	10	10	0	0	0
क्रियात्मक अनुसंधान	20	40	0	10	10	0	10	10	0	0	0	0
असाइनमेंट्स	10	30	0	0	50	10	0	0	0	0	0	0
अध्यापकों एवं विद्यार्थियों द्वारा मिलकर बनाये गये प्रोजेक्ट	0	0	30	30	0	10	20	10	0	0	0	0
विद्यार्थियों द्वारा बनाये गये प्रोजेक्ट	0	0	10	10	0	40	20	10	10	0	0	0
अध्यापक द्वारा बनाए गये प्रोजेक्ट	0	10	10	0	10	0	50	20	0	0	0	0
समूहगत प्रोजेक्ट कार्य	0	20	20	0	0	0	0	40	20	0	0	0
गृहकार्य	0	0	10	0	0	30	0	0	60	0	0	0
मौखिक परीक्षा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	66	23	11
व्यक्तिगत प्रोजेक्ट कार्य	0	0	0	0	0	0	0	0	0	24	76	0
लिखित प्रश्नपत्र	0	0	0	0	0	0	0	0	0	10	1	89

तालिका–2 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि प्रथम वरीयता के रूप में 70 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु भूमिका निर्वाह को चुना गया। द्वितीय वरीयता के रूप में क्रियात्मक अनुसंधान को सर्वाधिक 40 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु चुना गया। तृतीय प्राथमिकता के रूप में अध्यापकों एवं विद्यार्थियों द्वारा मिलकर बनाए गये प्रोजेक्ट को 30 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु चुना गया। चतुर्थ प्राथमिकता के रूप में शैक्षिक पर्यटन तथा अध्यापकों एवं विद्यार्थियों द्वारा मिलकर बनाए गये प्रोजेक्ट को 30 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु चुना गया। पंचम् प्राथमिकता के रूप में असाइनमेंट्स को 50 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु चुना गया। षष्ठ प्राथमिकता के रूप में विद्यार्थियों द्वारा बनाए गये प्रोजेक्ट को 40 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु चुना गया। सप्तम् प्राथमिकता के रूप में अध्यापकों द्वारा बनाए गये प्रोजेक्ट को 50 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु चुना गया। अष्टम् प्राथमिकता के रूप में समूहगत प्रोजेक्ट कार्य को 40 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु चुना गया। नवम् प्राथमिकता के रूप में गृहकार्य को 60 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु चुना गया। दशम् प्राथमिकता के रूप में मौखिक परीक्षा को 66 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु चुना गया। एकादश प्राथमिकता के रूप में व्यक्तिगत प्रोजेक्ट कार्य को 66 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु चुना गया। द्वादश प्राथमिकता के रूप में लिखित प्रश्नपत्र को 89 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु चुना गया।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, October 2024

प्रस्तुत अध्ययन का द्वितीय उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के परीक्षण निर्माण/प्रशासन से सम्बन्धित ज्ञान का परीक्षण करना था। इस हेतु शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित सतत एवं व्यापक मूल्याँकन परीक्षण में सम्मिलित सम्बन्धित प्रश्नों के विकल्पों में से न्यादर्श द्वारा चुने गये विकल्पों की आवृत्तियां एवं प्रतिशत ज्ञात किया गया। जिसका विवरण तालिका–3 में दिया गया है:

तालिका–3 माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के परीक्षण निर्माण/प्रशासन से सम्बन्धित ज्ञान के परीक्षण में न्यादर्शद्वारा चुने गये विकल्पों की आवृत्तियां एवं प्रतिशत

स–सतत एवं व्यापक मूल्याँकन परीक्षण निर्माण/प्रशासन के ज्ञान से सम्बन्धित प्रश्न एवं उसके उत्तरों के विकल्प		आवृत्ति	प्रतिशत
1–एक मूल्याँकन उपकरण का क्या उद्देश्य होता है?			
1	विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक स्तर का परीक्षण करना	12	12
2	विद्यार्थियों के बोधात्मक स्तर का परीक्षण करना	11	11
3	विद्यार्थियों के कौश्लात्मक स्तर का परीक्षण करना	15	15
4	उपर्युक्त सभी	62	62
2–परीक्षण के कठिनता स्तर से आप क्या समझते हैं?		**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	परीक्षण का कठिन होना	20	20
2	परीक्षण का आसान होना	17	17
3	परीक्षण के पदों/प्रश्नों की सापेक्षिक कठिनाई	63	63
3–योग्यताओं के अनुरूप विद्यार्थियों में विभेद करने वाला परीक्षण		**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	उत्तम होता है	68	68
2	उत्तम नहीं होता है	18	18
3	कह नहीं सकते	14	14
4–परीक्षक बदलने पर, एक परीक्षण पर किसी विषयी के अंक बदल जाते हैं। परीक्षण में..... नहीं है।		**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	सार्थकता	12	12
2	विभेदकता	15	15
3	वस्तुनिष्ठता	73	73
5–एक परीक्षण के प्रशासन के निश्चित अंतराल के उपरान्त पुनः प्रशासन के फलस्वरूप दोनो अवसरों में विषयी के प्राप्तांकों के मध्य की संगतता कहलाती है।		**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	वैधता	19	19
2	विश्वसनीयता	63	63
3	मनक	18	18
6–एक परीक्षण की वह सीमा, जिस तक वह वही मापता है, जिस हेतु उसका निर्माण किया गया है, कहलाती है।		**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	वैधता	62	62

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, October 2024

2	क्षमता	17	17
3	विश्वसनीयता	21	21

तालिका–3 के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में परीक्षण निर्माण/प्रशासन से सम्बन्धित ज्ञान के परीक्षण के समस्त पदों/प्रश्नों पर 50 प्रतिशत से अधिक शिक्षकों द्वारा उपयुक्त उत्तरों को चुना गया है। अतः परीक्षणोपरांत माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में सतत एवं व्यापक मूल्याँकन की परीक्षण निर्माण/प्रशासन प्रक्रिया से सम्बन्धित संतोषजनक ज्ञान पाया गया।

प्रस्तुत अध्ययन का तृतीय उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की सतत एवं व्यापक मूल्याँकन के प्रति अभिवृत्ति का परीक्षण करना था। इस हेतु शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित सतत एवं व्यापक मूल्याँकन परीक्षण में सम्मिलित सम्बन्धित पदों के विकल्पों में से न्यादर्श द्वारा चुने गये विकल्पों की आवृत्तियां एवं प्रतिशत ज्ञात किया गया जिसका विवरण तालिका–4 में दिया गया है:

तालिका–4 माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की सतत एवं व्यापक मूल्याँकन के प्रति अभिवृत्ति

क्रम सं०	द–सतत एवं व्यापक मूल्याँकन के प्रति अभिवृत्ति सम्बन्धित पद	विकल्पों की आवृत्तियां एवं प्रतिशत					
		सहमत		असहमत		अनिश्चित	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1	क्या आपको लगता है कि सतत व्यापक शिक्षण एवं अधिगम, सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु अत्यावश्यक पूर्वावश्यकता है?	52	52	24	24	24	24
2	क्या आपको लगता है कि सतत एवं व्यापक मूल्याँकन से विद्यार्थियों के ऊपर दबाव बढता है?	24	24	50	50	26	26
3	क्या आपको लगता है कि लगातार मूल्याँकन कार्य से शिक्षकों का कार्यभार बढ़ जाता है?	11	11	67	67	22	22
4	क्या आपको लगता है कि सतत एवं व्यापक मूल्याँकन समय, धन एवं श्रम का अपव्यय है?	09	9	70	70	21	21
5	क्या आपको लगता है कि सतत एवं व्यापक मूल्याँकन, पूर्व प्रचलित परीक्षण पद्धति (मासिक परीक्षा, त्रैमासिक परीक्षा, अर्धवार्षिक परीक्षा एवं वार्षिक परीक्षा) से अधिक प्रभावी है?	70	70	09	9	21	21
6	क्या आपको लगता है कि सतत एवं व्यापक मूल्याँकन से शिक्षण कार्य पर विपरीत प्रभाव पडता है?	09	9	70	70	21	21
7	आपके अनुसार विद्यार्थियों का व्यापक सतत मूल्याँकन हेतु सकारात्मक रुझान है।	73	73	16	16	11	11
8	क्या सतत एवं व्यापक मूल्याँकन लागू करने के उपरान्त आपको अपने विद्यार्थियों में सुधार का अनुभव हुआ?	73	73	16	16	11	11
9	क्या विद्यार्थियों का मूल्याँकन करते समय उनको मूल्याँकन	77	77	12	12	11	11

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, October 2024

	मापदंड बताए जाने चाहिए?						
10	क्या आपको लगता है कि सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु छात्रों के अनुपात में शिक्षकों की संख्या पर्याप्त है?	73	73	19	19	08	8
11	क्या आपके विचार में सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु आपके विद्यालय में भौतिक संसाधन पर्याप्त हैं?	73	73	19	19	08	8
12	क्या आपको लगता है कि आपको सतत एवं व्यापक मूल्याँकन से सम्बन्धित औपचारिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए?	96	96	04	4	00	0

तालिका–4 के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में से 50 प्रतिशत से अधिक शिक्षकों ने सतत एवं व्यापक मूल्याँकन से सम्बन्धित धनात्मक पदों (पद संख्या 1, 5, 7, 8, 9, 10, 11 एवं 12) से सहमति व्यक्त की जबकि 50 प्रतिशत से अधिक शिक्षकों ने सतत एवं व्यापक मूल्याँकन से सम्बन्धित नकारात्मक पदों (पद संख्या 2, 3, 4 एवं 6) से अपनी असहमति व्यक्त की। इस प्रकार यह प्रतिपादित किया जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में सतत एवं व्यापक मूल्याँकन के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पायी गयी।

अध्ययन के निष्कर्ष

अध्ययन के फलस्वरूप निम्नांकित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

- माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में सतत एवं व्यापक मूल्याँकन से सम्बन्धित संतोषजनक ज्ञान पाया गया।
- माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों द्वारा मौखिक परीक्षा, व्यक्तिगत प्रोजेक्ट कार्य एवं लिखित प्रश्नपत्र को सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु सर्वाधिक अल्प वरीय विधियों के रूप में चुना गया।
- सतत एवं व्यापक मूल्याँकन हेतु माध्यमिक स्तर के शिक्षकों द्वारा भूमिका निर्वाह, क्रियात्मक अनुसंधान, शैक्षिक पर्यटन, अध्यापकों एवं विद्यार्थियों द्वारा मिलकर बनाए गये प्रोजेक्ट आदि को सर्वाधिक प्राथमिकता प्रदान की गयी।
- माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों द्वारा असाइनमेंट्स, विद्यार्थियों द्वारा बनाए गये प्रोजेक्ट, अध्यापकों द्वारा बनाए गये प्रोजेक्ट, समूहगत प्रोजेक्ट कार्य एवं गृहकार्य को सतत व्यापक मूल्याँकन हेतु मध्यम स्तरीय वरीयता प्रदान की गयी।
- माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में सतत एवं व्यापक मूल्याँकन की प्रक्रिया के सफल संचालन से सम्बन्धित संतोषजनक ज्ञान पाया गया।
- माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में सतत एवं व्यापक मूल्याँकन के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पायी गयी।
- माध्यमिक स्तर के शिक्षकों द्वारा सतत एवं व्यापक मूल्याँकन से सम्बन्धित औपचारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता अनुभूत की गयी।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, October 2024

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. Aggrawal, M., (2005). Examination Reform Initiatives in India. *Journal of Indian Education*, 31(1), 27-35.

[2]. Anand, H., Sharma, G., & Khatoon, R. (2013). Comparative study of stress in continuous and comprehensive evaluation system. *International Journal of Social Science & Interdisciplinary Research*, 2(9), 90-94.

[3]. Best, J. W. & Khan J. V., (1992). *Research in Education*. Prentice Hall India Pvt. Ltd. New Delhi.

[4]. *Continuous and Comprehensive Evaluation.* http://cbse.nic.in/cce/index.html#. Retrieved October 8, 2019.

[5]. *Continuous and Comprehensive Evaluation(2013). Teachers' Handbook for Primary Stage.* National Council of Educational Research and Training, New Delhi.

[6]. Cyrila.V. &jeyasekaran, D., (2016). Attitude towards Continuous and Comprehensive Evaluation of High School Students. *I-manager's Journal on Educational Psychology*, 9(4), 21-26.

[7]. Kauts D.S. and Kaur, V. (2013). Perception and Attitude of Teachers from Rural and Urban Background towards Continuous and Comprehensive Evaluation at Secondary Level. *Educationia Confab*, 2(5), 11-14.

[8]. Thote, P. (2014). An Analysis of Attitude of Secondary School Teachers towards FDP of CCE. *International Multidisciplinary Research Journal Research Direction*, 1(8), 20-22.

[9]. Sarla, R. & Mamta, A. (1998). How Well are Teachers Aware about Continuous and Comprehensive Evaluation. *Indian Education Review*, 33(1), 132-142.

[10]. Singh, A., Patel, J., & Desai, R. (2013). Attitude of Student Teachers towards Continuous Comprehensive Evaluation with reference to gender, caste and Habitat. *Educationia Confab*. 2(1), 65-80.